Answer Starts

From Page 5

MPS–001

स्नातकोत्तर उपाधि कार्यक्रम

(राजनीति विज्ञान)

(एम. पी. एस.)

सत्रांत परीक्षा

जून, 2025

एम.पी.एस.-101 : राजनीतिक सिद्धांत

समय : 3 घण्टे *अधिकतम अंक : 100*

---

*नोट : प्रत्येक भाग में से कम-से-कम दो प्रश्न चुनते हुए कुल **पाँच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 20 अंक का है।*

MPS 01 - June 2025

भाग—I

1. उदारवाद किसे कहते हैं ? व्याख्या कीजिए।

2. लोककल्याणकारी राज्य पर एक टिप्पणी लिखिए।

3. स्वतंत्रतावाद से आप क्या समझते हैं ? विस्तृत वर्णन कीजिए।

4. ऐतिहासिक भौतिकवाद पर चर्चा कीजिए।

5. ग्राम्शी की आधिपत्य की धारणा का परीक्षण कीजिए।

भाग—II

6. कट्टरवाद की विशेषताओं की व्याख्या कीजिए।

7. राष्ट्रवाद किसे कहते हैं ? व्याख्या कीजिए।

MPS 01 - June 2025

8. बहुसंस्कृतिवाद और इसकी विशेषताओं पर विस्तार से चर्चा कीजिए।

9. फासीवादी विश्व दृष्टिकोण की व्याख्या कीजिए।

10. नारीवाद में जेंडर–लिंगभेद पर चर्चा कीजिए।

× × × × ×

भाग—I

प्रश्न 1. उदारवाद किसे कहते हैं ? व्याख्या कीजिए।

उत्तर :

उदारवाद एक महत्वपूर्ण राजनीतिक और सामाजिक विचारधारा है जो व्यक्ति की स्वतंत्रता, अधिकारों और गरिमा को सर्वोच्च स्थान देती है। यह विचारधारा इस सिद्धान्त पर आधारित है कि प्रत्येक व्यक्ति स्वतंत्र है और उसे अपने जीवन के संबंध में निर्णय लेने का अधिकार होना चाहिए। उदारवाद का मुख्य उद्देश्य ऐसी सामाजिक और राजनीतिक व्यवस्था स्थापित करना है जिसमें व्यक्ति को स्वतंत्रता, समानता और न्याय प्राप्त हो सके।

उदारवाद का विकास यूरोप में आधुनिक काल के दौरान हुआ। उस समय समाज में राजाओं की निरंकुश सत्ता और धार्मिक संस्थाओं का अत्यधिक प्रभाव था। इन परिस्थितियों में कई विचारकों ने व्यक्ति की स्वतंत्रता और अधिकारों की रक्षा के लिए नए विचार प्रस्तुत किए। इसी प्रक्रिया में उदारवाद का उदय हुआ। उदारवाद ने यह विचार प्रस्तुत किया कि राज्य की शक्ति सीमित होनी चाहिए और नागरिकों के अधिकारों का सम्मान किया जाना चाहिए।

उदारवाद का सबसे महत्वपूर्ण तत्व व्यक्ति की स्वतंत्रता है। उदारवादी विचारक मानते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति को सोचने, बोलने, लिखने और अपनी जीवन शैली चुनने की स्वतंत्रता होनी चाहिए। यह स्वतंत्रता समाज

के विकास के लिए भी आवश्यक मानी जाती है क्योंकि जब व्यक्ति स्वतंत्र रूप से विचार करता है तो नए विचारों और नवाचारों का जन्म होता है।

उदारवाद का दूसरा महत्वपूर्ण सिद्धान्त समानता है। उदारवाद के अनुसार सभी नागरिक कानून के सामने समान होते हैं और किसी भी व्यक्ति के साथ धर्म, जाति, लिंग या सामाजिक स्थिति के आधार पर भेदभाव नहीं किया जाना चाहिए। समानता का यह सिद्धान्त आधुनिक लोकतांत्रिक व्यवस्था की आधारशिला माना जाता है।

उदारवाद लोकतंत्र और संवैधानिक शासन का भी समर्थन करता है। उदारवादी विचारक मानते हैं कि शासन की शक्ति जनता से आती है और सरकार को जनता के प्रति उत्तरदायी होना चाहिए। संविधान और कानून के माध्यम से सरकार की शक्तियों को सीमित किया जाता है ताकि नागरिकों के अधिकारों की रक्षा की जा सके।

उदारवाद आर्थिक क्षेत्र में भी स्वतंत्रता पर बल देता है। इसके अनुसार व्यक्तियों को व्यापार, उद्योग और आर्थिक गतिविधियों में भाग लेने की स्वतंत्रता होनी चाहिए। हालांकि आधुनिक उदारवाद यह भी मानता है कि राज्य को समाज के कमजोर वर्गों की सहायता करने और सामाजिक न्याय सुनिश्चित करने के लिए कुछ हद तक हस्तक्षेप करना चाहिए।

समय के साथ उदारवाद में कई परिवर्तन हुए हैं। प्रारंभिक उदारवाद मुख्य रूप से आर्थिक स्वतंत्रता और सीमित शासन पर बल देता था, जबकि

आधुनिक उदारवाद सामाजिक कल्याण, शिक्षा और स्वास्थ्य जैसी सुविधाओं को भी महत्वपूर्ण मानता है।

अंततः कहा जा सकता है कि उदारवाद एक ऐसी विचारधारा है जो व्यक्ति की स्वतंत्रता, समानता और अधिकारों की रक्षा पर आधारित है। इसने आधुनिक लोकतंत्र, मानव अधिकारों और संवैधानिक शासन के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है और आज भी यह राजनीतिक विचारों की एक प्रमुख धारा के रूप में माना जाता है।

प्रश्न 2. लोककल्याणकारी राज्य पर एक टिप्पणी लिखिए।

उत्तर :

लोककल्याणकारी राज्य वह राज्य व्यवस्था है जिसमें सरकार का मुख्य उद्देश्य केवल शासन चलाना नहीं होता, बल्कि नागरिकों के सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक कल्याण को सुनिश्चित करना भी होता है। इस प्रकार के राज्य में सरकार समाज के सभी वर्गों के जीवन स्तर को सुधारने के लिए सक्रिय भूमिका निभाती है। लोककल्याणकारी राज्य का लक्ष्य एक ऐसा समाज बनाना है जिसमें सभी नागरिकों को समान अवसर और सम्मानजनक जीवन जीने की सुविधा प्राप्त हो।

लोककल्याणकारी राज्य की अवधारणा आधुनिक युग में विशेष रूप से विकसित हुई। औद्योगिक क्रांति के बाद समाज में आर्थिक असमानता, बेरोजगारी और गरीबी की समस्याएँ बढ़ने लगीं। इन समस्याओं के समाधान के लिए यह विचार सामने आया कि राज्य को केवल कानून

और व्यवस्था बनाए रखने तक सीमित नहीं रहना चाहिए, बल्कि उसे नागरिकों के जीवन को बेहतर बनाने के लिए भी कार्य करना चाहिए।

लोककल्याणकारी राज्य की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि इसमें सामाजिक न्याय पर विशेष बल दिया जाता है। सरकार यह प्रयास करती है कि समाज में संसाधनों और अवसरों का उचित वितरण हो। इसके लिए विभिन्न योजनाएँ और कार्यक्रम चलाए जाते हैं जिनका उद्देश्य गरीब और कमजोर वर्गों की सहायता करना होता है।

इस प्रकार के राज्य में शिक्षा और स्वास्थ्य को अत्यधिक महत्व दिया जाता है। सरकार नागरिकों को बेहतर शिक्षा प्रदान करने के लिए विद्यालयों और विश्वविद्यालयों की स्थापना करती है तथा स्वास्थ्य सेवाओं को सुलभ बनाने के लिए अस्पतालों और चिकित्सा सुविधाओं का विस्तार करती है। इन सुविधाओं का उद्देश्य नागरिकों के जीवन की गुणवत्ता को सुधारना होता है।

लोककल्याणकारी राज्य सामाजिक सुरक्षा की व्यवस्था भी करता है। इसमें बेरोजगारी भत्ता, वृद्धावस्था पेंशन, दुर्घटना बीमा और अन्य सामाजिक सुरक्षा योजनाएँ शामिल होती हैं। इन योजनाओं के माध्यम से सरकार यह सुनिश्चित करती है कि किसी भी नागरिक को जीवन की बुनियादी आवश्यकताओं से वंचित न होना पड़े।

इसके अतिरिक्त लोककल्याणकारी राज्य आर्थिक विकास को भी प्रोत्साहित करता है। सरकार विभिन्न नीतियों के माध्यम से रोजगार के

अवसर बढ़ाने और उत्पादन को बढ़ावा देने का प्रयास करती है। साथ ही वह श्रमिकों के अधिकारों की रक्षा के लिए श्रम कानूनों को लागू करती है।

लोककल्याणकारी राज्य में सरकार और नागरिकों के बीच सहयोग और विश्वास का संबंध होता है। नागरिक करों के माध्यम से राज्य के कार्यों में योगदान देते हैं और बदले में सरकार उनकी सुरक्षा और कल्याण की जिम्मेदारी निभाती है।

अंततः कहा जा सकता है कि लोककल्याणकारी राज्य आधुनिक लोकतांत्रिक व्यवस्था का एक महत्वपूर्ण स्वरूप है। इसका उद्देश्य केवल शासन करना नहीं बल्कि समाज के सभी वर्गों के कल्याण को सुनिश्चित करना है। यह व्यवस्था समानता, न्याय और मानव गरिमा के सिद्धान्तों को मजबूत बनाती है।

प्रश्न 3. स्वतंत्रतावाद से आप क्या समझते हैं ? विस्तृत वर्णन कीजिए।

उत्तर :

स्वतंत्रतावाद एक राजनीतिक विचारधारा है जो व्यक्ति की स्वतंत्रता को सर्वोच्च मूल्य मानती है। इस विचारधारा के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन, संपत्ति और विचारों के संबंध में स्वतंत्र रूप से निर्णय लेने का अधिकार होना चाहिए। स्वतंत्रतावाद यह मानता है कि राज्य की शक्ति सीमित होनी चाहिए और सरकार को केवल उतना ही हस्तक्षेप

प्रश्न 4. ऐतिहासिक भौतिकवाद पर चर्चा कीजिए।

उत्तर :

ऐतिहासिक भौतिकवाद एक महत्वपूर्ण सामाजिक और राजनीतिक सिद्धान्त है जिसके माध्यम से समाज के विकास और परिवर्तन को समझाने का प्रयास किया जाता है। इस सिद्धान्त के अनुसार इतिहास की गति मुख्य रूप से भौतिक परिस्थितियों, विशेषकर उत्पादन के साधनों और उत्पादन संबंधों से निर्धारित होती है। इसका अर्थ यह है कि समाज की आर्थिक संरचना ही उसके राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक ढांचे को प्रभावित करती है।

ऐतिहासिक भौतिकवाद का मूल विचार यह है कि किसी भी समाज की संरचना को समझने के लिए सबसे पहले उसकी आर्थिक व्यवस्था को समझना आवश्यक है। समाज में लोग किस प्रकार उत्पादन करते हैं, उत्पादन के साधनों का स्वामित्व किसके पास है और धन का वितरण किस प्रकार होता है, ये सभी बातें सामाजिक संरचना को निर्धारित करती हैं। जब उत्पादन के तरीकों में परिवर्तन होता है, तो समाज की अन्य संस्थाओं में भी परिवर्तन होने लगता है।

Get Solved
Question Papers
of IGNOU MPS
CLICK HERE

अंततः कहा जा सकता है कि ऐतिहासिक भौतिकवाद समाज के इतिहास को आर्थिक आधार और वर्ग संघर्ष के माध्यम से समझाने वाला महत्वपूर्ण सिद्धान्त है। यह बताता है कि समाज में परिवर्तन आकस्मिक नहीं होते बल्कि वे भौतिक परिस्थितियों और उत्पादन संबंधों में होने वाले बदलावों का परिणाम होते हैं।

प्रश्न 5. ग्राम्शी की आधिपत्य की धारणा का परीक्षण कीजिए।

उत्तर :

ग्राम्शी की आधिपत्य की धारणा आधुनिक राजनीतिक सिद्धान्त में एक महत्वपूर्ण विचार के रूप में मानी जाती है। इस धारणा के माध्यम से यह समझाया जाता है कि किसी समाज में सत्ता केवल बल या दमन के माध्यम से ही कायम नहीं रहती, बल्कि लोगों की सहमति और स्वीकृति के माध्यम से भी स्थापित होती है। आधिपत्य का अर्थ है कि कोई वर्ग समाज के अन्य वर्गों पर केवल राजनीतिक नियंत्रण ही नहीं रखता,

Get Solved Question Papers of IGNOU MPS

CLICK HERE

भाग–II

प्रश्न 6. कट्टरवाद की विशेषताओं की व्याख्या कीजिए।

उत्तर :

कट्टरवाद एक ऐसी विचारधारा या प्रवृत्ति है जिसमें व्यक्ति या समूह अपने विचारों, मान्यताओं और परंपराओं को पूर्णतः सही और अंतिम सत्य मानता है तथा उनके प्रति अत्यधिक कठोर और अडिग रहता है। कट्टरवाद में लचीलेपन की कमी होती है और यह अक्सर अन्य विचारों, मतों या जीवन शैलियों को स्वीकार करने से इंकार करता है। इस कारण कट्टरवाद सामाजिक और राजनीतिक जीवन में संघर्ष और असहिष्णुता को जन्म दे सकता है।

Get Solved
Question Papers
of IGNOU MPS

CLICK HERE

प्रश्न 7. राष्ट्रवाद किसे कहते हैं ? व्याख्या कीजिए।

उत्तर :

राष्ट्रवाद एक ऐसी राजनीतिक और सामाजिक विचारधारा है जो राष्ट्र के प्रति प्रेम, निष्ठा और एकता की भावना को महत्व देती है। राष्ट्रवाद का मुख्य विचार यह है कि एक राष्ट्र के लोग अपने सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और सामाजिक संबंधों के आधार पर एकता का अनुभव करते हैं और वे अपने राष्ट्र की स्वतंत्रता, सुरक्षा और प्रगति के लिए मिलकर कार्य करते हैं। राष्ट्रवाद आधुनिक राजनीतिक जीवन की एक महत्वपूर्ण शक्ति के रूप में उभरा है।

राष्ट्रवाद की अवधारणा इस विचार पर आधारित है कि एक राष्ट्र के लोग साझा पहचान रखते हैं। यह पहचान भाषा, संस्कृति, इतिहास, परंपराओं और सामूहिक अनुभवों के माध्यम से विकसित होती है। जब लोग इन तत्वों के आधार पर स्वयं को एक समुदाय का हिस्सा मानते हैं, तब उनके भीतर राष्ट्र के प्रति लगाव और जिम्मेदारी की भावना उत्पन्न होती है।

राष्ट्रवाद का [illegible] लोगों को यह प्रेरणा देता है कि वे व्यक्तिगत या क्षेत्रीय हितों से ऊपर उठकर राष्ट्र के सामूहिक हितों [illegible] सहयोग और एकजुटता की भावना विकसित होती है।

Get Solved Question Papers of IGNOU MPS

CLICK HERE

प्रश्न 8. बहुसंस्कृतिवाद और इसकी विशेषताओं पर विस्तार से चर्चा कीजिए।

उत्तर :

बहुसंस्कृतिवाद एक सामाजिक और राजनीतिक विचार है जिसके अनुसार समाज में विभिन्न संस्कृतियों, भाषाओं, धर्मों और परंपराओं के लोगों का अस्तित्व स्वाभाविक और स्वीकार्य माना जाता है। इस विचारधारा का मुख्य उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि समाज में रहने वाले सभी सांस्कृतिक समूहों को समान सम्मान और अधिकार प्राप्त हों। बहुसंस्कृतिवाद इस बात पर बल देता है कि विविधता किसी समाज की कमजोरी नहीं बल्कि उसकी शक्ति हो सकती है।

Get Solved Question Papers of IGNOU MPS

CLICK HERE

प्रश्न 9. फासीवादी विश्व दृष्टिकोण की व्याख्या कीजिए।

उत्तर :

फासीवादी विश्व दृष्टिकोण एक ऐसी राजनीतिक विचारधारा है जो राज्य की सर्वोच्चता, कठोर अनुशासन और एक सशक्त नेतृत्व पर आधारित होती है। इस विचारधारा में व्यक्ति की स्वतंत्रता को कम महत्व दिया जाता है और राज्य को सर्वोपरि माना जाता है। फासीवाद का उदय बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ में हुआ और यह विशेष रूप से कुछ देशों में एक शक्तिशाली राजनीतिक आंदोलन के रूप में सामने आया।

फासीवादी विश्व दृष्टिकोण की सबसे प्रमुख विशेषता राज्य की सर्वोच्चता है। इस विचारधारा के अनुसार राज्य व्यक्ति से अधिक महत्वपूर्ण होता है और नागरिकों का कर्तव्य है कि वे राज्य के प्रति पूर्ण निष्ठा रखें।

Get Solved
Question Papers
of IGNOU MPS

CLICK HERE

प्रश्न 10. नारीवाद में जेंडर–लिंगभेद पर चर्चा कीजिए।

उत्तर :

नारीवाद एक महत्वपूर्ण सामाजिक और राजनीतिक विचारधारा है जिसका मुख्य उद्देश्य समाज में महिलाओं के साथ होने वाले भेदभाव को समाप्त करना और उन्हें पुरुषों के समान अधिकार तथा अवसर प्रदान करना है। नारीवाद यह मानता है कि इतिहास के लंबे कालखंड में

Get Solved
Question Papers
of IGNOU MPS
CLICK HERE
.com